IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बस्ती जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन

कमलेश यादव* डॉ सुनील त्रिवेदी**

*शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

**शोध निदेशक, शिक्षाशास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

सारांश

माध्यमिक शिक्षा शैक्षिक संरचना की मध्यस्थ कड़ी है, जिसके नीचे प्रारम्भिक शिक्षा और ऊपर विश्व विद्यालीय शिक्षा होती है। विकासशील भारत की जनतंत्रीय प्रणाली में माध्यमिक शिक्षा का विशेष महत्व है। माध्यमिक शिक्षा देश की जनशक्ति का स्त्रोत है। उच्च कक्षाओं में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थी और प्राथमिक स्कूलों के लिए अधिकांश शिक्षक माध्यमिक शिक्षा के द्वारा ही तैयार किये जाते है। विश्वविद्यालयों का शैक्षिक स्तर एवं विद्यार्थियों में सीखने की क्षमता आदि बहुत कुछ माध्यमिक स्तर की शैक्षिक नींव पर निर्भर करती हैं। इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा की सुदृढ़ता पर ही राष्ट्र की शक्ति एवं विषय पर निर्भर करता है। मध्यवर्ती दर पर कार्य करने वाले अनेक औद्योगिक, सामाजिक एवं राजनैतिक नेता इसी शिक्षा से तैयार होकर निकलते हैं। अधिकांश देशों में माध्यमिक शिक्षा के बाद ही विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त हो जाता है। विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर अपने व्यक्तित्व को समझे व उचित समायोजन करके सफलता को प्राप्त कर सकें। इसलिए शोधाधी ने अनुसंधान विषय बस्ती जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्य समयोजन का अध्ययन नामक शोध शीर्षक का चयन शोध कार्य हेतु किया गया एवं शोध अध्ययन के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु कुछ निश्चित उद्देश्यों का निर्माण किया गया। शोध अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश के बस्ती जनपद में स्थित सरकारी र गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया।

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्य पूर्ण विकास में योगदान देती है। व्यक्ति की वैयक्तिता का पूर्ण विकास करती है उसे वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। उसे जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्वों के लिये तैयार करती है और उसके व्यवहार विचार एवं दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज विश्व देश के लिये हितकर होता है। शिक्षा स्थिर नही है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है। समय के साथ-साथ इसके अर्थ और उद्देश्य में परिवर्तन होता रहा है।

कार्टर वी० गुड महोदय माध्यमिक शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुये कहा कि "माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा का वह समय है जो समान्यतः 12 से 17 वर्ष वर्ग के बालों के लिये होता है। इस काल में अध्ययन के प्रमुख उपकरणों का प्रयोग स्वामिती, अभिव्यक्ति, वैचारिक स्वतन्त्रता विविध जानकारी प्राप्त करने, बौद्धिक कुशलता, अभिरूचि और आदशों तथा आदतों के निर्माण पर बल दिया जाता है।

हुमायूँ कबीर के अनुसार समाज के शिक्षा के किसी भी कार्यक्रम में माध्यमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यहीं से प्राथमिक तथा वयस्क शिक्षा के लिये अध्यापक मिलते हैं। यह छात्रों को विश्वविद्यालयों तथा उच्चतर अध्ययन की दूसरी संस्थाओं के लिये तैयार करते हैं। कुछ थोड़े से विद्यार्थी जो उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के लिये आगे जाते है तब तक विश्वविद्यालयों में प्राप्त होने वाले अवसरों का पूरा लाभ नहीं उठा सकते, जब तक कि माध्यमिक शिक्षा की स्वस्थ प्रणाली द्वारा इसका आधार पक्का न कर दिया जाए अतएव यदि कोई कारण न भी हो तो केवल इन कारणों को दृष्टि में रखते हुये यह आवश्यक है कि माध्यमिक शिक्षा उच्च कोटि की हो तभी यह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगी।

हमारे देश में 1937 में प्रान्तों में स्वायत्त शासन स्थापित हुआ। उसी वर्ष गांधी जी ने राष्ट्रीय शिक्षा योजना' प्रस्तुत की जिसमें 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों की कक्षा 1 से 8 कक्षा तक की शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क करने का प्रस्ताव किया । गांधी जी एवं उनके साथियों ने इसके लिये हस्तकौशल पाठचयों तैयार की और इसका सम्बन्ध जीवन से जोड़ा । हमारे संविधान की धारा 45 में यह घोषणा की गई है कि संविधान लागू होने के समय 10 वर्ष के अन्दर 14 वर्ष तक के बच्चों की अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त किया जायेगा। इसका आशय कक्षा 1 से कक्षा 8 तक की शिक्षा से है।

अध्ययन की आवश्यकता

स्वतन्त्रता के उपरांत हमारे राष्ट्रीय नेताओं का ध्यान शिक्षा के पुनर्गठन की और गया। शैक्षिक विकास को वरीयता दी गई। पंचवर्षीय योजनायें प्रारम्भ की गई। इनके द्वारा शैक्षिक विकास के नवीन कार्यक्रम प्रारम्भ करने के लक्ष्य निर्धारित किए गये। नये स्कूल व कॉलेज खोले गये। देश काल की परिस्थितियों के अनुरूप पाठ्य विषयों में परिवर्तन किए गये । छात्रों एवं अध्यापकों की संख्या में वृद्धि हुई। माध्यमिक स्तर पर स्त्री शिक्षा के प्रसार को वरीयता दी गई। पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक तकनीकी और व्यवसायिक विषयों का समावेश किया गया। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने का प्रयास किया गया। छात्रों की व्यक्तित्व समायोजन व मानसिक क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग हो व उनका सफलता के लिए मार्गदर्शन करते हुए कई प्रकार की विधियों का प्रयोग किया गया।

समस्या की उत्पत्ति

हमारे देश में इस समय शिक्षा समवर्ती सूची में है । किसी भी माध्यमिक स्तर की शिक्षा की व्यवस्था करना सरकार का संयुक्त उत्तरदायित्व है, केन्द्र सरकार शिक्षा सम्बन्धी राष्ट्रीय नीति बनाती है. प्रान्तीय सरकारों को शिक्षा की व्यवस्था के सम्बन्ध में सलाह देती है और आर्थिक सहायता देती है। सरकारी विद्यालयों को भी दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है- केन्द्रीय सरकारों द्वारा तथा प्रान्तीय सरकारों के विभिन्न विभागों द्वारा संचालित इस भिन्न-2 प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों के प्रशासन, वित्त और नियन्त्रण की व्यवस्था मिन्न-2 अभिकरणों के हाथों में है और भिन्न-2 प्रकार से होती है। इतना ही नहीं अपितु कुछ माध्यमिक विद्यालय एकदम साधन विहीन है। इस निर्धन माने जाने वाले देश में 5-5 लाख डोनेशन और 5-5 हजार रु0 प्रतिमाह तक शिक्षण शुल्क लेने वाले माध्यमिक विद्यालय भी चल रहे है। इस समय इन विभिन्न प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों को प्रान्तीय सरकारों के प्रशासनिक ढांचे के अन्तर्गत लाना, अति महा संस्थाओं पर नियन्त्रण करना और इन सब प्रकार की माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं पर नियन्त्रण रखना एक बड़ी समस्या है।

समस्या कथन

"बस्ती जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन ।"

समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

(अ) व्यक्तित्व :- व्यक्तित्व शब्द की उत्पति Personality शब्द जो कि लैटिन भाषा के Persona शब्द से हुपी है। Persona शब्द का अर्थ है मुखौटा। इस प्रकार Personality शब्द का अर्थ व्यक्ति के बाह्य आवरण अर्थात दृष्यगत गुणों से होता है। किन्तु वास्तव में व्यक्तित्व शब्द व्यक्ति की सम्पूर्ण आन्तरिक एवं बाहय संरचना का द्योतक है जो कि उसके गुणों के रूप में उसको आचार तथा व्यवहार में परिलक्षित होती है।

भारतीय दर्शन के अनुसार - भारतीय दर्शन में व्यक्तित्व को जीवात्मा कहा जाता है. और यह सम्प्रत्यय व्यक्तित्व के मनोदैहिक संरचना से सम्बन्धित होकर उसके नैतिक एवं आध्यात्मिक पहलू से सम्बन्धित होता है। प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर में जीवात्मा का वास होता है, जो व्यक्ति में सभी तरह के दैहिक एवं मानसिक संरचना में होने वाले सभी परिवर्तनों के दौरान भी अपनी मौलिक अवस्था में बना होता है। इस कारण सम्पूर्ण व्यक्तित्व आध्यात्मिक आत्म अभिव्यक्ति का एक उपयुक्त चक्रयान के रूप में कार्य करता है।

1. अन्नमय कोष (Annamaya Kosha) - इसमें दैहिक शरीर तथा ज्ञानेन्द्रिय सम्मिलित होता है। यह आत्मन का बाह्य आवरण या जैविक दैहिक आवरण होता है और अन्य सूक्ष्म तहाँ या आचरणों के लिए एक अल्पकालिक पर्दा का काम करता है। इसमे पाँच कर्मेन्द्रिय अर्थात संभाषण तंत्र हाथ, पैर उत्सर्जन अंग एवं जनन अंग सम्मिलित होते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें पीच ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् आँख, कान, नाक, मुँह तथा त्वचा भी सम्मिलित होते है। अन्नमय कोष आहार से बनता है. जो हमारा शरीर है।

2. प्राणमय कोष (Pranamaya Kosha) - व्यक्ति के जीवन को बनाये रखने वाले पाँच जैव बल अर्थात् वायु, आग, जल, पृथ्वी तथा आकाश इसमें सम्मिलित होते हैं। इसलिए इसे जैव आवरण भी कहा जाता है. इसके भीतर प्राण क्रियाशील रहता है।

3. मनोमय कोष (Manomaya Kosha) - इसे मानसिक आवरण भी कहा जाता है। मन एक मुख्य अंग होता है जो आकारहीन एवं स्थानहीन होता है। तथा यह अनुभूतियों को प्राप्त करने वाला तथा उसे रिकॉर्ड करने वाला वके रूप में भी कार्य करता है। जिस इच्छाशक्ति द्वारा स्वार्थ सिद्ध करने वाला कार्य किया जाता है। उसे अहंकार कहा जाता है।

4. विज्ञानमय कोष (Vigyanmaya Kosha) - आत्मन का यह बौद्धिक आवरण होता है और यह मुन्द्धि से सम्बन्धित होता है। इसके द्वारा विभेदनात्मक कार्य किये जाते हैं। मन् बुद्धि एवं अहंकार या अहम भाव मानव व्यक्तित्व के तीन मानसिक तत्व है।

5. आनन्दमय कोष (Anandmaya Kosha) - यह आत्मन् या जीवात्मा का आनन्दमय या सुखद आवरण है और इसे व्यक्तित्व की पराकाष्ठा कहा जाता है। आत्मा का वास्तविक स्वरूप आनन्द मय है। इसलिये आत्मा को सच्चिदानन्द भी कहा गया है। आत्मा शुद्ध सत् चित् और आनन्द का सम्मिश्रण है।

डी०सी० मैक्सीलैण्ड- "व्यक्ति के व्यवहार के सभी पहलुओं के बारे में सन्तोषप्रद सम्प्रत्यीकरण प्रस्तुत करने हेतु व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग किया जाता है। सम्प्रत्ययीकरण' एक अमूर्त प्रक्रिया है, जो व्यक्ति व्यवहार के मूर्त स्वरूपों के आधार पर निर्मित होती है।"

(ब) समायोजन :- समायोजन एक अवस्था है अर्थात व्यक्ति की एक संतुलित अवस्था अथया दशा जिसमें हम व्यक्ति को सुसामंजस्यपूर्ण व्यक्ति कहते हैं। समायोजन से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपनी आवश्यकताओं आकांक्षाओं और अपनी परिस्थितियों के बीच सुसामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाये रखने से होता है।

समायोजन का अर्थ- समायोजन शब्द को सामंजस्य व्यवस्थापन अथवा अनुकूलन के नाम से भी जाना जाता है। जब कोई बालक अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता है, तो धीरे-धीरे यह आने वाली स्थितियों से समझौता कर लेता है। यह समझौते की प्रक्रिया ही मनोवैज्ञानिक भाषा में समायोजन कहलाती है।

एच०सी० स्मिथ के अनुसार - एक अच्छा समायोजन यह है. जो यथार्थ पूर्णता के साथ-साथ व्यक्ति को सन्तोष प्रदान करता है। अनातोगत्वा, यह व्यक्ति की कुण्ठाओं, उसके तनावों एवं चिन्ताओं जिन्हें उसे सहन करना पड़ता है. न्यूनातिन्यून बना देता है। स्मिथ की दृष्टि में व्यक्ति को ठीक प्रकार में सन्तोष मिलना ही समायोजन क्षमता का आवश्यक लक्षण है। यदि व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से संतुष्ट नहीं है, या वह अपने को भीतर से आन्दोलित महसूस करता है तो उसे हम समायोजित नहीं कह सकते हैं।

जेम्स सी० कोलमैन के अनुसार - समायोजन अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने तथा खिचावों से निपटने के लिए व्यक्ति द्वारा किये गये प्रयासों का परिणाम है। इस सम्बन्ध में कोलमैन ने समंजनात्मक व्यवहार को भी परिभाषित किया है। उनकी राय में समंजनात्मक व्यवहार यह है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने खिंचावपूर्ण परिस्थितियों से निर्वाह करता है. अपनी आवश्यकताओं को संतुष्ट करता है, तथा अपने पर्यावरण से मधुर समन्वय वा तालमेल बना लेता है।

(स) व्यक्तित्व समायोजन :- वातावरण के साथ समायोजन करने में व्यक्ति का व्याक्तित्व महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। क्योंकि वातावरण में समायोजन करने की प्रक्रिया के दौरान ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है। अतः व्यक्तित्व समायोजन से तात्पर्य किसी परिस्थिति विशेष में व्यक्ति के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति से है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

साहित्य के समीक्षा में दो शब्द है- साहित्य और समीक्षा। साहित्य शब्द परम्परागत विभिन्न अर्थ प्रदान करता है। यह भाषा के सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता है। इसकी विषयवस्तु के अन्तर्गत गद्य कारण, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि आते हैं। अनुसंधान के क्षेत्र में साहित्य शब्द किसी विषय के अनुसंधान के विषय क्षेत्र के ज्ञान की ओर संकेत करता है, जिसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक व्यवहारिक और तथ्यात्मक शोध अध्ययन आते हैं।

डब्ल्यू० आर० बर्ग के अनुसार- "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उसकी नींव को बनाता है, जिसके ऊपर भविष्य का कार्य किया जाता है। यदि हम साहित्य की समीक्षा द्वारा प्रदान किए गए ज्ञान की नींव बनाने में असमर्थ होते हैं तो हमारा कार्य सम्भवतया तुच्छ और प्रायः उस कार्य की नकल मात्र ही होता है, जोकि पहले ही किसी के द्वारा किया जा चुका है।

व्यक्तित्व से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

भारत व विदेशों में किये हुए शोधकार्य

° **समिधा पाण्डे एवं विजय लक्ष्मी (2006),** ने किशोरों की व्यक्तित्व विशेषताएं तथा निर्भरता प्रवृतित शीर्षक पर अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य लाभान्वित तथा अलाभान्वित किशोरों की निर्भरता तथा विभिन्न व्यक्तित्व विशेषतायें प्राप्त करना है। अतः लाभान्धित किशीर वे हैं जो अभिभावक देखभाल से वंचित नहीं है तथा किसी भी प्रकार की पंचिता से पीडित है। यह निर्भरता मापने के लिये सिन्हा की निर्भरता प्रवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है तथा व्यक्तित्व विशेषतायें मापने के

लिये आइजनेक व्यक्तित्व प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था। शोधार्थी ने न्यादर्श रूप में 150 किशोरों का चयन पटना शहर से किया। परिकल्पना परीक्षण करने के उपरान्त निष्कर्ष यह प्रकट करते हैं कि ये सभी अलाभान्वित किशोर सांवेगिक उन्नयन तथा समर्थन चाहते हैं। यह जिम्मेदारी है कि उन्हें जीवन के हर पहलू में अधिक आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भर बनने में सहायता व समर्थन प्रदान करें। अतः अलाभान्वित किशोरों को समाज से शारीरिक व मानसिक शक्ति प्राप्त करने की आवश्यकता है। उन्हें केवल दया के आधार पर नहीं छोड़ा जा सकता है।

• **जागृत्ति तंवर (2010)** जाग्रति तंवर ने अन्तर्मुली एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व का किशोरी के आत्मविश्वास समायोजन एवं उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन शीर्षक पर शोध कार्य किया। शोध अध्ययन हेतु शोधार्थिनी द्वारा राजस्थान राज्य के कोटा जिले के 13 सरकारी एवं गैर सरकारी उब्बतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर कक्षा ग्यारहवीं एवं बारहवीं के 434 किशोर एवं किशोरियों को न्यादर्श में शामिल किया गया।

प्रस्तुत शोध अध्यगन के लिये शोधार्थिनी ने निम्नलिखित उद्देश्यों का प्रयोग किया गया-

I. किशोरों के व्यक्तित्व को अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी में वर्गीकृत करना।
II. अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व का किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव की तुलना करना।
III. व्यक्तित्व के आधार पर किशोरों की समायोजन क्षमता की तुलना करना।
IV. बर्हिमुखी किरगैर बालक एवं बर्हिमुखी फियोर बालिकाओं के आत्म विश्वास की तुलना करना।
V. बर्हिमुखी किशोर बालक एवं बहिंमुखी किशोर बालिकाओं की समायोजन क्षमता वो अनार को ज्ञात करना।
VI. अन्तर्मुखी बालकों एवं अन्तर्मुखी बालिकाओं के समायोजन क्षमता के अन्तर की तुलना करना।
VII. अन्तर्मुखी बालकों एवं अन्तर्मुखी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना। शोधार्थिनी को उपयुक्त उद् देश्यों के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुळे

1) व्यक्तित्व मापनी के द्वारा जनसंख्या में से 214 किशोर बालक एवं 220 किशोर बालिकाओं को स्यादर्स हेतु चयन किया गया जिनकी व्यक्तित्व प्रकृति अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी है। अनार्मुखी किशोर छात्र 57 तथा अन्तर्मुखी किशोर छात्रायें 65 है। 167 बर्हिमुखी किशोर छात्र तथा 155 बर्हिमुखी छात्रायें म्याद रूप में चयनित है।

2) अन्तर्मुखी किशोरों एवं बर्हिमुखी किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर होता है। बर्हिमुखी किशोरों की शैक्षिक उपलथि अन्तर्मुखी किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि की अपेक्षा अधिक पायी गयी।

3) अन्तर्मुखी किशोरों एवं बर्हिमुखी किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर होता है। बर्हिमुखी किशोरों की समायोजन क्षमता अन्तर्मुखी किशोरों की समायोजन क्षमता से अधिक है।

4) बर्हिमुखी किशोर बालकों एवं बर्हिमुखी किशोर बालिकाओं के आत्मविश्वास स्तर में सार्थक अन्तर होता है। बर्हिमुखी किशोर बालकों का आत्मविश्वास बर्हिमुखी किशोर बालिकाओं के आत्मविश्वास स्तर से अधिक पाया गया।

5) बहिंमुखी किशोर बालकों एवं बर्हिमुखी किशोर बालिकाओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर होता है। बर्हिमुखी किशोर बालिकाओं की समायोजन क्षमता बर्हिमुखी किशोर बालकों की अपेक्षा थोड़ी अधिक पायी गयी है।

6) अन्तर्मुखी बालकों एवं अन्तर्मुखी बालिकाओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

7) अन्तर्मुखी बालकों एवं अन्तर्मुखी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है। अर्थात् अन्तर्मुखी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि अन्तर्मुखी बालकों से अधिक है।

शर्मा, शिल्पी (2006) - ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभाविकता का सांवेगिक बुद्धिमत्ता के सन्दर्भ में अध्ययन किया तथा अपना शोध कार्य क्षेत्र झाँसी जनपद रखा और अपने शोध कार्य हेतु 300 ग्रामीण शहरी पुरुष एवं महिला शिक्षकों का चयन करते हुये वर्णनात्मक अनुसंधान विधि से अपना शोध कार्य सम्पन्न किया तथा आँकड़ों के संकलन के लिये व्यावसायिक संतुष्टि मापनी के रूप में पी० कुमार एण्ड डी०एन० मुथ्था का तथा शिक्षण प्रभाविकता के लिये भी पी० कुमार एण्ड डी०एन० मुथ्था द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया एवं सांवेगिक बुद्धिमत्ता मापनी के रूप में अंकुल हैडे, संजयोत पेठे तथा उपिंदर चार द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया। उपरोक्त उपकरणों एवं सोंख्यिकी विधियों की सहायता से संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण कर परिकल्पनाओं के अनुरूप निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये --

1. सम्पूर्ण न्यादर्श में पुरुष एवं महिला के प्राप्तांकों का व्यावसायिक संतुष्टि, शिक्षण प्रभाविकता एवं सांवेगिक बुद्धिमत्ता में बहुत कम विषमता और कुकुदता है।

2. लगभग सभी माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता औसत से थोड़ी अधिक है।

3. (a) पुरुष एवं महिला शिक्षकों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता का मध्यमान क्रमशः 118.82 तथा 121.61 पाया गया, जो प्रदर्शित करता है कि महिला शिक्षकों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है।

(b) पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दोनों समूहों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता का क्रांन्तिक मान 0.05 सार्थकता स्तर तथा मुक्तांश स्तर 298 पर सार्थक है। परिणाम यह प्रदर्शित करता है कि पुरुष एवं महिला शिक्षकों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. लगभग 54% माध्यमिक स्कूल शिक्षक अपने व्यवसाय से औसत रूप से संतुष्ट है और 13% शिक्षक अधिक संतुष्ट है और 33% शिक्षक अपने व्यवसाय से कम संतुष्ट है।

5. (a) महिला शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का मध्यमान 13.30 है जबकि पुरूष शिक्षकों का मध्यमान 14.47 है. जो स्पष्ट करता है कि महिला शिक्षक, पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अपने व्यवसाय से अधिक संतुष्ट है।

(b) टी-मान 0.05 सार्थकता स्तर तथा मुक्तांश स्तर 298 पर 2.53 है। टी-मान यह प्रदर्शित करता है कि पुरुष एवं महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

6. माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का सांवेगिक बुद्धिमत्ता के सन्दर्भ में अध्ययन कर पाया गया कि वह सांवेगिक रूप से कम संतुष्ट है और यह सांवेगिक रूप से उनके व्यवसाय सकारात्मक प्रभाव डालते है।

7. लगभग 60% माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविकता पर औसत प्रभाव पड़ता है तथा 23% शिक्षकों पर अधिक तथा 17% शिक्षकों पर कम प्रभाव पड़ता है।

8. महिला शिक्षक की शिक्षण प्रभाविकता पुरूष श्री अपेक्षा अधिक है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्य समायोजन में कोई सार्थक अभार नहीं है।

अध्ययन का परिसीमांकन

1. प्रस्तुत अध्ययन में शोध के रूप में बस्ती जनपद में स्थित मामि विद्यालयों का चयन किया गया

2 प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर तक सीमित है जिसमें उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को सम्मिलित किया गया है।

3. प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया है जिनकी कुल 100 तक सीमित है।
4. शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समायोजन तथा मानसिक योग्यता की कि उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

अनुसंधान की शोध प्रक्रिया

ज्ञान के किसी भी क्षेत्र या शाखा में नवीन तथ्यों, विद्यारों, अवधारणा या सिद्धान्त की खोज के लिए अपनाई गई क्रमबद्ध प्रक्रिया ही अनुसंधान कहलाती है।

डब्ल्यूएस मुनरों के अनुसार - अनुसंधान उन समस्याओं के अध्ययन की एक विधि है जिसका अपूर्ण अथवा पूर्ण समाधान तथ्यों को आधार पर ढूँढ़ना है।

अनुसधान के लिए तथ्य लोगो के मतों के कथन्

ऐतिहासिक सथ्य लेख अथवा अभिलेख परखों से प्राप्त फल प्रश्नावली के उत्तर अथवा प्रयोगों से प्राप्त सामग्री हो सकती है।

जॉर्ज जे० मुले – "शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिये व्यवस्थित रूप में बौद्धिक ढंग से वैज्ञानिक पिदि के प्रयोग तथा अर्धापन को अनुसंधान कहते हैं। इसके अन्तर्गत यदि किसी धावस्थित अध्ययन के द्वारा शिका विकास किया जाए तो उसे शैक्षिक अनुसंधान कहते है।"

अनुसंधान अभिकल्प (Research Design)

अनुसंधान प्रश्नना में दो शब्द है- अनुसंधान और प्ररचना अनुसंधान का अर्थ है। वैज्ञानिक पद्धति द्वाण साहिंक एवं व्यवस्थित सेन की खोज एवं पुराने तथ्यों का सत्यापन।

करलिंगर के अनुसार- शीच प्रारूप अनुसंधान की एक योजना संरचना तथा नीति है अनुसंधान से सम्बन्धित प्रश्नों के जरार प्राचा करने एवं विवाद पर नियत्रण रखने के लिए किया जाता है।

वर्णनात्मक अनुसंधान (Descriptive Research Design)

शिक्षा तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी अनुसंधान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसंधान का सबसे अधिक महत्व है और यह बड़े व्यापक-रूप मे व्यवहार में आया है।

सर्वेक्षण अनुसंधान (Survey Method)

सर्वेक्षण अनुसंधान का प्रयोग मुख्य रूप से सामाजिक विज्ञानों में वर्तमान की किती स्थिति घटना या वैचारिक चिंतन आदि से सम्बन्धित समस्या के लिए किया जाता है।

जनसंख्या (Polution)

जनसंख्या को अंग्रेजी में यूनीवर्स कहा जाता हैं। यूनीवर्स का शाब्दिक अर्थ विश्व या समष्टि होता है. किन्तु निदर्शन में इसका अर्थ इकाईयों के योग या सम्पूर्णता से है।

शोध न्यादर्श विधि का चुनाव

प्रस्तुत शोध में बस्ती जनपद के माध्यमिक सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया। द्वितीय स्तर पर चयनित स्तर के 100 विद्यार्थियों (छात्र/छात्राओं) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि (Simple Randam Sampling) से किया गया। माध्यमिक विद्यालयों के चयन के पश्चात् माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य की अनुमति से कक्षा-प्राध्यापकों से उपस्थित पंजिका प्राप्त की तत्पश्चात उपस्थित छात्र-छात्राओं की सम आकार की पंक्तियों बनाकर एक थैली में डालकर उनको मिश्रित कर लिया फिर थैली में से बिना भेदभाव किये 15 पंक्तियी निकाली गयी, जिन छात्र-छात्राओं के क्रमांक प्राप्त हुए उन्हीं का प्रतिदर्श वो रूप में चयनित किया गया था।

बस्ती जनपद के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन

क्र.स	माध्यमिक विद्यालय का नाम
1.	उच्च प्राथमिक विद्यालय, बेलवाडारी, बस्ती
2.	कम्पोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय, मिश्रोलिया, बस्ती
3.	जूनियर हाईस्कूल, आहरा , मुंडेरवा, बस्ती
4.	कम्पोजिट उच्च प्राथनिक विद्यालय, ओडवारा, बस्ती
5.	पूर्व माध्यमिक विद्यालय, मड़वा नगर, बस्ती

बस्ती जनपद के गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन

क्र.स	माध्यमिक विद्यालय का नाम
1.	किसान इंटर कालेज, बस्ती
2.	राजकीय इंटर कालेज , बस्ती
3.	खैर इंडस्ट्रियल इंटर कालेज , बस्ती
4.	श्री कृष्ण पाण्डेय इंटर कालेज, बस्ती
5.	श्री गोविंद राम सकसेरिया इंटर कालेज, बस्ती

यादृच्छिक या दैवीय प्रतिदर्शन

इस विधि को कभी-कभी सरल यादृच्छिक न्यादर्श कभी-कभी अप्रतिबन्धित यादृच्छिक न्यादर्श तथा कभी-कभी केवल यादृच्छिक न्यादर्श भी कहते हैं। इस प्रविधि के अन्तर्गत सम्पूर्ण जनसंख्या की प्रत्येक इकाई को चुने जाने के समान अवसर होते हैं। एक सरल यादृच्छिक न्यादर्श एक-एक इकाई को लेकर उद्धृत किया जाता है। जनसंख्या का अंकन एक से आगे की अन्तिम संख्या 1 से N तक) किया जाता है तथा यादृच्छिक सख्याओं की श्रृंखला का चुनाव या तो यादृच्छिक संख्याओं की सारणी की सहायता से किया जाता है।

मानकीकृत परीक्षण

परीक्षण मानकीकरण से हमारा आशय ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें विषय वस्तु विधि एवं निष्कर्ष सभी समरूप से निश्चित हो तथा जिसके लिए किन्हीं निश्चित मानकों को निर्धारित किया जाता हो।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

परीक्षण का चयन

शोधार्थी के व्यक्तित्व समायोजन के सन्दर्भ में एक ही परीक्षण आर०के० ओझा द्वारा रचित व्यक्तित्व समायोजन मापनी उपलब्ध हो सका। फलस्वरूप शोध के सन्दर्भ में इसी उपलब्ध परीक्षण को वरीयता प्रदान की गई।

सांख्यिकीय विधियाँ

मध्यमान (Mean)

मध्यमान वह मान अथवा राशि है, जो किन्हीं दी हुई राशियों अथवा प्राप्तांकों के योगफल को उन राशियों की संख्या से भाग देने पर आती है।

मानक विचलन अपना प्रामाणिक विचलन (Standard Deviation)

विचलन ज्ञात करने की यह सर्वोत्तम मापक तथा विधि है। इसलिए इस मापक का सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है।

टी-परीक्षण (T-test)

दो माध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की परख के लिये 'टी परीक्षण का प्रयोग किया जाता है।

तथ्यों का प्रस्तुतीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रदत आकृति और प्राप्तांक के रुप में एकत्रित किये जाते हैं. यह इस बात पर निर्भर करता है। अधिकांशत परीक्षणों के द्वारा जो प्रदत्त एकत्रित किये जाते हैं. यह प्राप्तांकों के रुप में होते हैं तथा प्रश्नावली से प्राप्त प्रदत्त आकृति के रूप में होते हैं। प्रदत्त यह वस्तु है जिनकी सहायता से हम समझते हैं कि शोध के निष्कर्ष वैध राधा विश्वसनीय है। इनकी प्रमाणिकता की परख की जा सकती है।

H_1- माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	मुक्तांश 0.05	सार्थकता स्तर		परिणाम
छात्र	50	30.65	5.925	0.286	98	.05	1.98	स्वीकृत
छात्राएं	50	28.95	4.275			.01	2.63	

अर्थापन -- उपरोक्त सारणी संख्या में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों के आधार पर माध्यमान एवं प्रमाप विचलन की गणना की गई है।

1. छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 30.65 व 28.95 है।
2. छात्र एवं छात्राओं के प्रमाप विचलन क्रमशः 5.925 व 4.275 है।

दोनों समूहों की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 0.286 प्राप्त हुआ। तथा तालिका में मुक्तांश (df) 98 पर सार्थकता स्तर 1.98 है। गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक अनुप्यात का मान मानकीकृत तालिका मान 0.05 से कम है। अत शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है और शोध परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन में अन्तर है और छात्रों का व्यक्तित्व समायोजन छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन से अधिक है।

शैक्षिक निहितार्थ

जॉन डी०वी० के अनुसार -- सीखने का विषय या पाठ्यक्रम पदार्थों विचारों और सिद्धान्तों का चित्रण है जो कि उद्देश्यपूर्ण लगातार क्रियान्वेषण संसाधन या बाधा के रूप में आ जाते हैं।

पाठ्यक्रम बालक के सर्वांगीण विकास शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक कि नैतिक व सामाजिक विकास को इंगित करता है। बालकों में उचित व्यक्तित्व के गुणों के संयोजन से ही बालकों में सर्वांगीण विकास की प्राप्ति की जा सकती है।

बालकों के सामने विभिन्न समस्याओं को रखकर उनके वर्तमान में जीने के लिए सुझाव में उनकी परामर्श लेनी चाहिए। अभिभावक उन्हें वर्तमान में जीने के लिए परिस्थितियों का उचित निर्माण करें तथा हमेशा भविष्य की चुनौतियों के लिए खुले मस्तिष्क से विचार करने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें हमेशा उबित बालावरण में रहने के लिए योग्य बनाने का प्रयास करे। आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षक बालकों में व्यक्तिल्य के गुणों का विकास करता है। उनमे रचनात्मकता शक्ति का विकास करता है। जिससे बालक अपने आत्मिक चित्रों की संपित करता है और समाज में उचित स्थान प्राप्त करता है।

शिक्षा का परम कर्तव्य है कि बालक के बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास करना इसके लिए शिक्षक बृहद स्तर पर शारीरिक प्रशिक्षण शैक्षिक प्रशिक्षण, मानसिक प्रशिक्षण देने के साथ-साथ उनमें समय का चालन करने की शिक्षा प्रदान करते हैं। किशोर छात्रों के जीवन में ध्यान की कमी, ध्यान उघटना, अतिसक्रियता विड़चिड़ापन, आवेगशीलता कुण्ठा सहनशीलता की कमी पायी जाती है। उसको अवसाद विप्रेशन, पलायन, चिन्ता मय मनोग्रस्तता, दैहिक कष्ट तथा सिध्याइड लक्षण आदि पाये जाते हैं।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों के आधार पर मध्यमान एवं प्रमाप विचलन की सपना की गई है। छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 30.05 28.95 है। छात्र एवं छात्राओं के प्रमाप विचलन क्रमसः 5.925 में 4.275 है। दोनों समूहों की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 0.286 प्राप्त हुआ। तथा तालिका में मुक्तांश (७) ७० पर सार्थकता स्तर 1.90 है। गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान मानकीकृत तालिका मान 0.05 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है और शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्य समायोजन में अन्तर है और छात्रओं का व्यक्तित्व समायोजन छाक्रओं के व्यक्तित्व समायोजन से अधिक है।

आगामी अध्ययन हेतु सुझाव

1. यह आध्ययन केवल 100 छात्राओं पर किया गया है। अतः बड़े न्यादर्श पर अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की लिया गया है। जबकि इसमें स्नातक स्वर के विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
3. अध्ययन से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को लेकर किया जा सकता है।
4. यह अध्ययन नवोदय विद्यालय व केन्द्रीय विद्यालयों में भी किया जा सकता है।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन अन्य चरों के साथ भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. समिधा पाण्डे एवं विजय लक्ष्मी (2006), Samidha, Pandey and Vijay Lakshmi (2006), "Personality Characteristics and Dependent Proneness of Adolescents", Psycho- Lingua, Agra Publish-Linguistic Association of India, ISSN 0377-3132, Vol-36, No-2, July 2006, Pg-156-158.

2. जागृति तंवर (2010) अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व का किशोरों के आत्मविश्वास समायोजन एवं उपलब्धि स्तर पर पढ़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबन्ध पीएचडी० (शिक्षाशास्त्र) उज्जैन (म०प्र०)

3. शर्मा, शिल्पा (2016), रीवा सम्भाग के महाविद्यालयीन छात्राओं में खिलाड़ी और गैर खिलाडी के व्यक्तित्व एवं अनिवृत्ति पर खेलकूद का सकारात्मक प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन International Journal of Pshysical Education, Spots and Health. IISSN 2394-1685, Vo 3(1) 2016 Pg. -305-30 www.kheljournal.com

4. स्वरूप, आशीष (2021) पाठ्यक्रम अध्ययन माधव प्रकाशन, आगरा, पेज नं. 10.90, 107, 108

5. डॉ० सारस्वत, मालती, प्रो० एस०एन० गौतम, भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामरिक समस्यायें: आलोक प्रकाशन, लखनऊ, पेज 220. 242. 246. ISBN No.-978-81-89599-02-7

6. शमी, प्रो० ए०के० (2006) शिक्षा में अनुसंधान विधियों, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा पेज नं 277-282 179 181.

7. पाण्डेय, डॉ० रामशकल (2014) शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमिः, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा पेज नं 11, 12

3. सिंह, अरूण कुमार एवं आशीष कुमार सिंह, व्यक्तित्य का मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली पटना पेज में 435-437, 1-41, 57

9. गुप्ता, प्रो० एस०पी० (2012) अनुसंधान संदर्शिका शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पेज नं01-22 37-53 54-61, 62-90 107-120, 165-180 181-191, 210-223, 261-292, 325-344 345-362 470- 495

10. भार्गव, डॉ० महेश (2007), आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन एस०पी० भार्गव बुक हाउस आगरा पेज नं.- 141-232

11. कपिल, डॉ० ए०के० (2012) अनुसंधान विधियाँ व्यवहारपरक विज्ञानों में एक भार्गक हाउस, आगरा पेज नं.- 150-162, 220-200, ३

12. राय, पारसनाथ, डॉ० सी०पी० राय (2012), अनुसंधान परिचय लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा पेज नं. - 95-107, 233-287, 19-20.119.

13. पाठक, पी०डी० (2010), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें अपवाल परियोशन्स आगरा।

14. लाल, रमन बिहारी (2012), शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी आरलाल बुक डिपो मेरत।

15: www.samajkaryshiksha.com

16. www.ncert.nic.in

17. www.humhindin

18. www.newssapata.com

19. www.upboardsolutions.com

20. www.socialresearchfoundation.com

21. www.educationjournal.org

22. www.scert.cg.gov.in

23. www.studypoint24.com

24. www.ncert.nic.in

25. www.wikipedia.org

26. www.shodhgangotri.com

27. www.hindisamay.com

28. www.myhindilekh.in